

दिमाग

तेज

कैसे

करें?

- मोहम्मद शकील



दिमाग तेज़ कैसे करें?

Written by
Mohammad Shakeel

Published by
CoolMitra

Follow writer on Instagram:

[@CoolMitra](#)

यही से पढ़ना शुरू करें बिना एक शब्द छोड़े

ये book नहीं है भाई, इसे एक book की तरह मत पढ़ना।

ये एक खदान है एक ऐसी खदान जहाँ से आप इतना सोना निकाल सकते हो कि ज़िन्दगी भर केवल इतने सोने से ही आप अपनी पूरी ज़िंदगी मचा के रख सकते हो।

Gold/ सोने का मतलब ऐसी understanding आपको पता चलने वाली है, एक ऐसा रास्ता आपको पता लगने वाला है, जिसे जानने के बाद में अगर practice कर ली तो आप कभी न रुकने वाले इंसान बन जाओगे।

एक ऐसे इंसान बन जाओगे, आप बार-बार अपने आप से ये सवाल करोगे कि आप इतनी चीज़ें कैसे कर लेते हो? जैसे मैं करता हूँ।

आप एक ऐसे इंसान बन जाओगे कि जिस चीज़ को हाथ लगाओगे वो सोना बन जायेगा, जिस चीज़ की बात करोगे

वहाँ से diamond निकाल दोगे, जिससे बात करोगे वो इंसान निहाल हो जाएगा।

फिर आप एक इंसान नहीं रहोगे, आपको human evolution के बारे में पता है? हम पहले क्या थे फिर बंदर, फिर आदिमानव और फिर इंसान बन गए।

लेकिन इस book को समझने के (न केवल पढ़ने) के बाद में आप इंसान से आगे बढ़ जाओगे।

Congratulation, न जाने कितने सालों बाद एक इंसान की क्या सोच होने वाली है, उसके लिए आपने action ले लिए, बस book में थोड़ा गहरा चला जाऊँ तो संभाल लेना, 2 से 3 बार पढ़ लेना लेकिन इस सोने की खदान से एक छोटी सी सोने की ring भी miss मत करना, पूरा लूट लेना।

मैं बहुत लालची इंसान हूँ, sorry guys, बोलते हुए अच्छा नहीं लग रहा, शायद मैंने खुद से ज़्यादा लालची इंसान नहीं देखा, मेरा लालच अभी आपसे ये माँग रहा है कि इस

book को अगर आप पढ़ो तो कम से कम एक इंसान छूटना नहीं चाहिए, सबकी income 1 लाख/monthly होनी चाहिए।

1 लाख monthly minimum, कोई 1M, कोई 10M earn करेगा, कोई 100M earn करेगा, पर इस किताब में बताई गयी बातें, (जो काश मुझे पहले कहीं से मिल गयी होती) आपको इंसान का 2.0 बना देगी।

आप पैसो को पैसों की नज़र से नहीं देखोगे, आप पैसों को coins की तरह देखोगे, आपको बस ये किसी game के coins लगेंगे, मानो जैसे आपको ये coins earn करने हैं क्योंकि ये-ये, इस-इस तरह की चीज़ें करनी है, कोई लालच नहीं, कोई डर नहीं, मन हुआ कमा लिया, मन हुआ ये कर लिया-वो कर लिया, मन हुआ आदत छोड़ दी, मन हुआ आदत पकड़ ली, मन हुआ खुश हो गए, मन हुआ अकेले हो गए कोई दिक्कत नहीं।

किसी का पैसो का goal हो सकता है तो किसी का कुछ पाना, exam crack करना, level achieve करना या कुछ सिख लेना हो सकता है।

इस किताब को पढ़ना नहीं, इसे चाटकर, घोलकर पीना है, इस book का print version में बहुत जल्द ले आऊंगा, आप खरीद कर अपनी अलमारी में रख देना, आपके बेटे-पोते इसी सोने की खदान का फ़ायदा ले पाए, आपको दुनिया के लोगों की तरह property या पैसा छोड़कर नहीं जाना है, आपको उनके लिए सोने की खदान छोड़कर जाना है।

मैं ये सब इतने confidence के साथ कैसे बोल रहा हूँ? क्योंकि मुझे एक ऐसी बात पता लग गयी है जो successful लोगों का secret code है।

नहीं-नहीं! ये internet पर कहीं नहीं मिलेगा!

जो है आपके हाथ में है, अगर ये झूठी hype लग रही है तो इस book के end होने के बाद मुझे message करके

बता सकते हो, लेकिन बिना book पढ़े कोई judge नहीं करेगा।

और हाँ मेरे भाई, ये book/किताब नहीं है, ये बस एक message है जो मैंने आपको लिखा है और उसे आप एक Whatsapp message की तरह पढ़ रहे हो और मैंने भी Whatsapp message की तरह भेजा है, Love You Guys, YouTube पर मुझे 20 लाख लोग प्यार करते हैं, Instagram पर 127k लोग प्यार करते हैं, बस अपने चाहने वालो को कुछ ऐसा बताने वाला हूँ जो आपकी ही नहीं बल्कि आपके पास जो भी बैठता है उनको भी बता दिया न तो उनकी भी पूरी की पूरी ज़िंदगी बदल सकती है।

चलो शुरू करते है काम की बात, अपने FOCUS की power बढ़ा दो, फ़ालतू के thoughts को दूर कर दो और तैयार हो जाओ एक विचारों के meditation के लिए।

दिमाग



ये फोटो Lucy मूवी से ली गयी है, जिसमे बताया है की क्या होगा अगर इंसान अपना दिमाग का 100% इस्तेमाल करने लग जाएगा, आपको भी जरूर देखनी चाहिए

यार ये बड़ी अनोखी चीज़ है, मैं लिख रहा हूँ क्योंकि मेरे दिमाग में कुछ पड़ा है, आप पढ़ रहे हो क्योंकि आप अपने दिमाग में वो लेना चाहते हो, तो indirectly data transferring हो रही है।

हम इंसानों ने यही किया है।

Information को आगे तक फैलाया है, सोचों दुनिया के पहले इंसान से लेकर अब तक जो पता चला है, जो समझ आता है वही तो आगे से आगे बताया जा रहा है, ऐसा नहीं

होता तो अब तक हर बार हर देश को, शायद हर इंसान को अपनी ज़िंदगी वहाँ से शुरू करनी होती जहाँ से एक आदिमानव करता था।

दिमाग़ एक ऐसी चीज़ है जिसे अगर आपने सही से समझ लिया, तभी उसे control/तेज़ कर सकते हो, तेज़ करना है या control, पहले समझना होगा।

Car चलानी है तो उससे पहले आपको उसकी जानकारी होनी चाहिए न? उसी तरह दिमाग़ के साथ है।

चलो तो ये क्यों है ज़रूरी?

दिमाग़ को समझना या बड़ा game खेलना सोने की खदान से सोना क्यों निकालना है?

पूरी दुनिया जहाँ मज़े मार रही है तो आपको क्यों सिर फोड़ना है इस book में?

क्योंकि मेरे भाई/बहन you are human.

इंसान हो आप, इस पृथ्वी पर कितने तरह के जीव रहते हैं, उनमें से केवल इंसान ही है जो चाँद पर जा पाया, दुनिया को बदल पाया, जंगल को शहर बना पाया, हवाँ में उड़ पाया, rocket बनाकर दूसरे ग्रह को अपना घर बना पा रहा है, जानवर ये सब नहीं कर पा रहे है ना? क्यों? इसकी वजह दिमाग ही है।

NOTE: दिमाग को हर जीव/जानवर के पास भी हैं, पर मैं समझ, critical thinking और problem solving सोच की बात कर रहा हूँ।

एक इंसान ही ऐसा प्राणी है जिसको ये दिमाग मिला है, अलग ही level की एक सोच मिली है, सोचने की skill मिली है, दिमाग में पड़ी memory को आप process कर सकते हो, आप दिमाग में पड़ी चीज़ों से निकालकर कुछ नया बना सकते हो।

अगर इतनी बड़ी शक्ति मिली है तो उसे use न करने का तो ये मतलब हुआ कि ऊपर वाले ने आपको इतना बड़ा गिफ्ट दिया है जिसको आप unbox नहीं कर रहे हो।

अगर आपको life में फाड़ के रखना है, आग लगानी है और केवल आग ही नहीं लगानी है ऐसी आग जो आपके जीते जी ने बुझे, तो इस gift को open करना होगा।

इस blue planet पर रहने वाले सिर्फ 1% लोग ही इस gift को open कर पाते हैं, क्या आप उस 1% क्लब में आते हो? अगर नहीं भी आते तो इस book को पढ़ने के बाद आ जाओगे।

First of all, सबसे बड़ा पूरे दिल से thanks ऊपर वाले को जिसने हमें दिमाग दिया, और book reading की value समझने की value दी।

आजाओ सारे के सारे अपनी sleepers उतारकर बैठ जाओ, mobile घर छोड़कर आ जाओ, अगर mobile से read कर रहे हो तो flight mode कर दो, क्योंकि मैं

नहीं चाहता कि मैं आपको समुद्र की सतह तक ले जाऊँ और बीच में आपका call आ जाये और मेरे हाथ से sleep होते ही आप वापस समुद्र के ऊपर वाले भाग तक पहुँच जाओ।

मैं आपको समुद्र की सतह दिखाना चाहता हूँ यार, मैं देख कर आ गया, और बहुत बार गया, अब आपको लेकर जाना चाहता हूँ, i promise, you will love that place.

जो-जो इंसान मेरे साथ समुद्र की सतह तक चलेंगे उनका दिमाग 8k pixels में काम करेगा, 8k pixels को मैं explain करूँगा, don't worry.

चलें?

बैठ गए सारे?

मैंने आपको step by step boring content नहीं दिया दिमाग तेज़ करने को लेकर जो पूरी दुनिया ही कर रही

है, आप Google पर search करोगे, how to increase brain memory, how to make brain stronger, how to control brain? तो आपको सही जवाब मिलेगा ही नहीं, Hindi, English सारे articles पढ़ लो, दिमाग तेज़ कैसे करे search करके भी पढ़ लो, पूरा YouTube छान लो, सही जवाब नहीं मिलेगा।

आपको हर जगह step by step boring content ही मिलेगा, step number one ये करो, 2. ये खाओ, 3. ये करो, वगेरह-वगेरह।

इस पूरी book में ना मैं आपको exercise करने का बोलूँगा, न meditation करने का, और न ही अच्छा food खाने का, of course ये बहुत-बहुत ज़रूरी है और आपका इन तीनों पर focus भी होना चाहिए, मेरा भी है और ये तीन नहीं रहेंगे तो दिक्कत हो जाएगी, पर ये चीज़ें already आपको पता है तो मैं ये आपको नहीं बताने वाला हूँ, और already internet का server लोगों ने

पूरी तरह से इन सब पर videos बना-बना कर भर दिया है तो मैं अब वो नहीं बोलने वाला हूँ।

As a kid मैंने बहुत search किया नहीं मिला, छोटा था तब ये ज़रूर पता था कि पहले दिमाग़ पर काम करना चाहिए फिर life पर लेकिन content नहीं मिला तो मैंने खुद ने ही इस दिमाग़ को सीखा, अब आपको बताने वाला हूँ, वो भी बिना बात को लंबे खीचें, ये एक काफ़ी छोटी eBook है जिसे आप काफ़ी जल्दी ख़त्म कर दोगे, मेरा मक़सद बात को बेवजह खीचना नहीं है बल्कि direct मुद्दे पर आना है, मेरे दिमाग़ में लिखते वक़्त 10 विचार आये हैं लेकिन मैंने 2-3 ही select करके लिखे हैं, ताकि आपको कम से कम समय मे best से best content दे सकूँ।

फिर से याद दिला देता हूँ।

ये eBook नहीं है, ये सफ़र है, ये कदम है, ये बात-चीत है, ये conversation है, आप direct मुझसे बात कर रहे

हो, आप सोने की खदान का रास्ता जान रहे हो, आपके हाथ मे map है, goldmine तक पहुँचने का नक्शा है।

चलो तो करें इस दिमाग को unlock बिल्कुल Lucy movie की तरह।

8k pixel वाला explain कर लेता हूँ, जितने भी मेरे भाई लोग पीछे रह गए हैं अगर, तो पहले वो clear कर लेते हैं।

अब मैं explain करने जा रहा हूँ 8k pixel theory को, पर्दा हटने वाला है उस राज से जिसकी वजह से मैं आपको इस eBook के माध्यम से बाँध कर रख पा रहा हूँ।

8K Pixel Thinking क्या है?

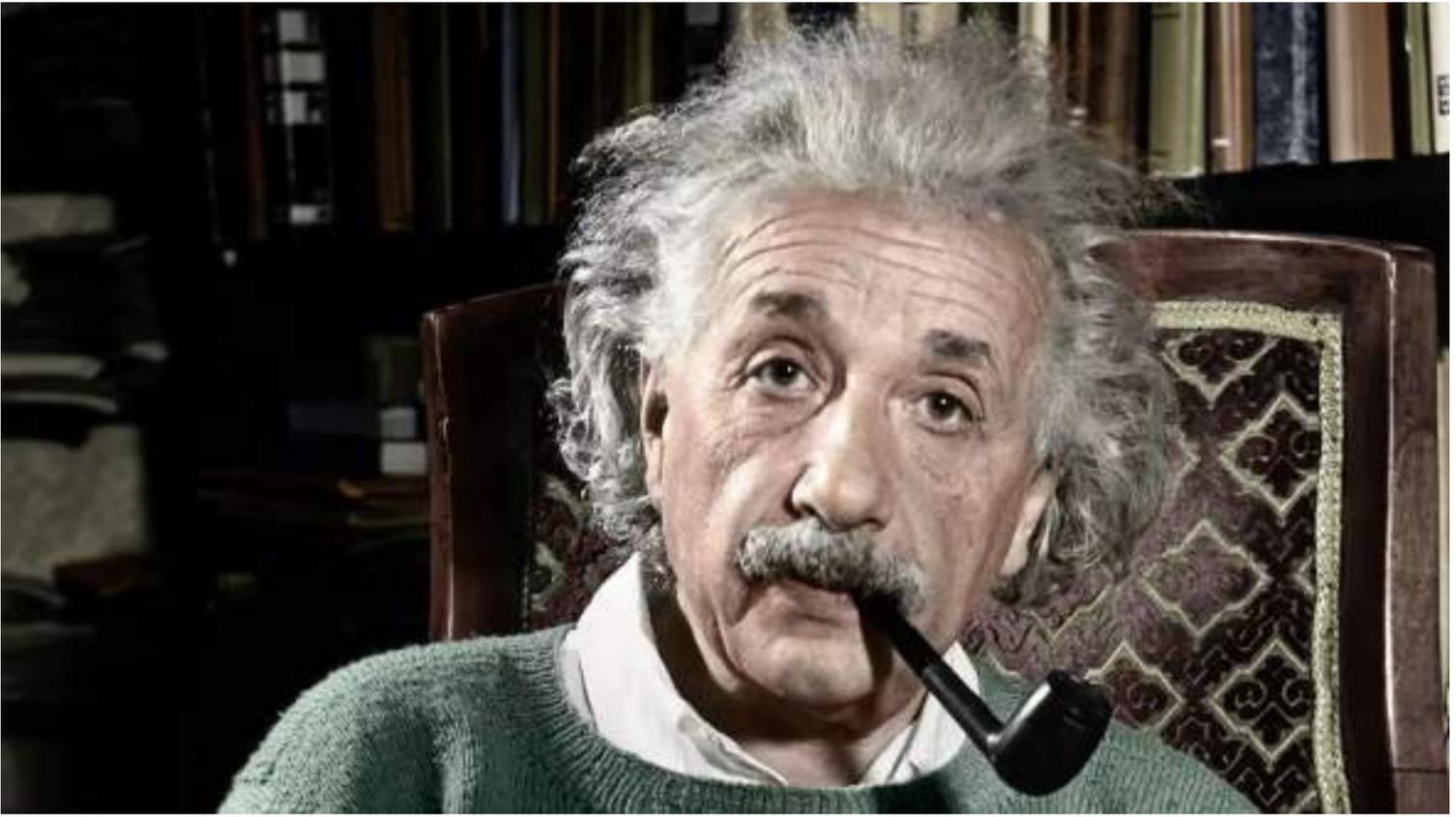
अब मैं जिस तरीके से बताने वाला हूँ कि दिमाग तेज़ किसे कहते हैं, मेरे according कब मान सकते हैं कि इसको दिमाग तेज़ कहते हैं? वो सुनने के बाद आपको इतनी ज़्यादा clarity हो जाएगी इस बात को लेकर की इसे बोलते हैं तेज़ दिमाग, और फिर आपको उसी पर work करना है अपने दिमाग को तेज़ करने के लिए।

मैं कोई points नहीं समझाने वाला कि ये खाओ, वो करो, ये करो, number 2 ये करो, number 3 reading करो, number 4 new language सिखो। ये सब मैं नहीं बताने वाला हूँ, और बादाम खाओ ये भी नहीं बताने वाला हूँ, ये सब तो internet पर भरा पड़ा है, अपुन आज वो बोलेगा जो आजतक पूरे internet worldwide कहीं discuss ही नहीं हुआ।

मैं कह रहा हूँ न कि जो मैं बताने वाला हूँ सिर्फ वही जान लो तो आपका दिमाग़ अलग तरह से सोचना शुरू कर देगा, दिमाग़ के सारे तार खोलने वाला हूँ, एक बार torch लग गयी फिर आपको ये पता लग ही जायेगा कि आपके दिमाग़ के अंदर कितना खजाना है, बस वहाँ उजाला करने की देरी है और उजाला होगा 8k pixels theory से।

इस eBook में केवल बात करने वाला हूँ कि दिमाग़ तेज़ कहते किसे हैं? वो अगर अच्छे से समझ गए आप तो खुद-ब-खुद समझ जाओगे कि इसे तेज़ कैसे करना है, sorted?

सबसे पहले एक myth तोड़ देता हूँ, याददाश्त का तेज़ होना तेज़ दिमाग़ नहीं होता, याददाश्त का तेज़ होना बहुत जगह help करता है लेकिन अगर आप ध्यान से observe करोगे तो genius और intelligent लोगों की याददाश्त कमज़ोर ही मिलेगी।



Albert Einstein की याददाश्त बहुत कमज़ोर थी, एक बार जब वो train में जा रहे थे तो काफ़ी देर तक वो अपनी ticket ढूँढते रहे, लोग कहने लगे सर आप legend हो, आपसे कोई ticket नहीं माँगेगा, आप क्यों ticket के खोने की tension कर रहे हो तो Einstein ने कहा कि ticket इसलिए ढूँढ रहा हूँ क्योंकि मुझे ये पता नहीं है कि मैंने कहाँ जाने के लिये ticket ली थी, मुझे ये याद नहीं है कि मुझे किस station पर उतरना है।

इसके अलावा movies में भी genius लोगों की याददाश्त कम ही बताते हैं।

जैसे Tony Stark part 3 में Tony Stark से पूछा जाता है कि आप मुझे नहीं जानते? आपको तो कुछ याद नहीं, तो Tony Stark कहते हैं कि मुझे तो ये भी याद नहीं कि मैंने आज नाश्ते में क्या खाया था।

इस dialogue के माध्यम से movie के script writer ने ये बताना चाहा है कि genius लोग weak memory वाले ही होते हैं, साथ ही काफ़ी research में भी ये सबूत मिला है, मैं ना केवल movie की बातें कर रहा हूँ जो कि obviously real life experience से नहीं ली जाती है बल्कि ये science ने भी बताया है।

THEWEEK



Forgetfulness could be a sign that you are super smart, say neuroscientists



Memory lapses are normal and may show signs of high intelligence



Web Desk



Updated: March 17, 2019 12:10 IST

तो memory तेज़ होना, याददाश्त तेज़ होना अच्छा point मान सकते हैं लेकिन इसका मतलब ये नहीं है कि

आप चीज़ों को अच्छे से समझ कर कुछ बना सकते हो, क्योंकि 2 चीज़ें होती है।

एक तो होता है याद होना और दूसरा होता है समझकर कुछ बनाना, यानी process करना।

एक होता है knowledge होना और एक होता है उसे use करना।

एक होता है data होना और एक उसे process करना।

जैसे कि mobile में एक तो memory space होता है और एक होता है processor.

तो memory के साथ आपका processor भी तेज़ होना चाहिए, पर हाँ!! मैं memroy के तेज़ होने को ग़लत नहीं ठहरा रहा, बस मैं ये कह रहा हूँ कि सिर्फ़ memory कारण नहीं है।

NOTE: Memory भी तेज़ होनी ज़रूरी है मैं ये नहीं कह रहा कि याददाश्त कम होगी तो चलेगा।

अब मैं आपको जो बताने वाला हूँ, वो भी मेरे according बताने वाला हूँ, मैं अपनी observation बताने वाला हूँ, और वो कुछ लोगों के लिए इतनी difficult होने वाली है कि बहुत कम लोग होंगे जो इस eBook के end तक टिक पायेंगे, बहुत ज़्यादा होंगे लगभग 90% लोग होंगे जो इस eBook को बीच में ही छोड़ देंगे, क्योंकि मैं बहुत ज़्यादा गहराई में जाने वाला हूँ और गहराई में सिर्फ़ वो ही लोग जा सकते हैं जो इस सवाल के पीछे पड़े कि आखिर में दिमाग़ तेज़ कहते किसे हैं? क्योंकि अगर आपको ये समझ आ गया कि तेज़ दिमाग़ कहते किसे हैं तो आप उसकी practice करके उसे achieve भी कर सकते हो।

eBook शुरू होने से पहले एक good news भी देता हूँ, अगर आपको मेरी बातें बहुत अच्छे से relate हो रही हैं तो समझ जाओ कि आप तेज़ दिमाग़ वाले circle में आते हो।

बाकी अफ़सोस उन लोगों के लिए है जो अभी भी सस्ता motivation और अनमोल वचन सुनने से ऊपर नहीं उठ

रहे, या जो इस eBook तक नहीं पहुँचे, मुझे कई बार उन लोगों पर तरस आता है जो दो line के motivation से पूरी life चलाने की कोशिश करते हैं और उसी दो line को हर जगह लगाते रहते हैं फिर चाहे कोई भी situation हो, ये वो लोग है जिनका दिमाग 8k pixel का नहीं हुआ है।

I mean एक example देता हूँ, मेरा gym trainer बोलता था "No Pain, No Gain." चलो मान लिया ये ठीक है लेकिन हर Pain ठीक नहीं होता, मेरे back में एक vein pain करती थी जब मैं back की नीचे दी गयी photo वाली exercise करता था, तब मेरे vien में pain होने की वजह से मैंने काफ़ी महीनों तक वो exercise नहीं की, अच्छा हुआ मैंने trainer की बात नहीं मानी क्योंकि वो कोई serious vein issue था जो धीरे-धीरे अपने आप ठीक हो गया, "No Pain, No Gain" वाली बात वहाँ apply होती है जब आपकी

muscle break होती है ना कि कुछ और break होता है। (wish करता हूँ मेरा trainer ये बात न पढ़े 😜)



Anyway, आप India का हाल देख सकते हो, सबसे ज़्यादा audience कैसी है, कैसा content ज़्यादा चलता है? ऐसा क्यों है?

Comedy देखलो तो काफ़ी सस्ते jokes पर हँस पड़ती है, 20% से भी कम लोगों का humour वाक़ई में ठीक-ठाक है, आप YouTube देखो।

Acting में bollywood देखलो, हर जगह आपको ये मिल जाएगा कि लोगों का दिल बड़ा कच्चा होता है, बहुत

ही आसानी से जीता जा सकता है, यानी कि वही बात micro pixel दिमाग नहीं है।

उनका दिमाग बारीक नहीं है।

अब मैंने ये बारीक word use किया है, इसका मैं बार-बार use करने वाला हूँ, जिसको ध्यान से पढ़ना कि बारीकी का मतलब क्या है, इस पूरी eBook में मैं केवल बारीक का मतलब ही बताने वाला हूँ, बारीकी को समझने के बाद ही आप समझ जाओगे कि तेज़ दिमाग किसे कहते हैं।

आपका दिमाग जितना बारीक होता है उतना ही तेज़ होता है, बारीक यानी आप कितना micro में जाकर सोच सकते हो, कितना sharp आपका दिमाग है, आप कितना zoom कर सकते हो, आप कितना गहराई में जा सकते हो, आप कितना अच्छा conclusion निकाल सकते हो, आप कितना अच्छा बात का मतलब निकाल सकते हो, आप कितनी अच्छी तरह से फ़र्क देख सकते हो (सबसे

important), आप कितना अच्छा एक दूसरे से चीज़ों को relate कर सकते हो, आप कितनी अच्छी similarity देख सकते हो दो चीज़ों में, आप कितना अच्छा imagine कर सकते हो, आप कितना अच्छा दिमागी सफर कर सकते हो, आप कितना अच्छा सपना देख सकते हो, आप सोते वक़्त कितने meaningful सपनें देख सकते हो।

मैंने अपने दिमाग़ के pixel बढ़ाने के बाद देखा कि मुझे सपने भी suspenseful web series की script की तरह आते हैं, चलो ये तो ज़्यादा हो गया कुछ लोगो के लिए पर ये मेरे साथ बहुत बार हुआ, जिसका reason मुझे विचारों को arrange करना ही लगता है, मैंने 8k pixel के ज़रिए अपने विचारों को ऐसे जमा-जमा कर रखा है दिमाग़ में कि मुझे सपने भी काफी managing और meaningful तरीके से आते हैं।

मैं इसको example के साथ में समझाता हूँ, मैं example में लेता हूँ एक image, जिस image का मतलब कोई बात हो सकती है, कोई भी situation या

concept हो सकता है और image के साथ मैं जोड़ दूँगा pixel, जिस तरह से image के pixel होते हैं जैसे 100×100 की image, 500×500 की image, 1000×1000 की image, तो मैं image के pixels को आपके दिमाग के सोचने की शक्ति से relate करवाते हुए समझाने वाला हूँ ताकि आपको समझने में आसानी हो।

अगर मैं बात कर रहा हूँ 100×100 की, तो मतलब दिमाग कम से कम pixel में सोच सकता है, यानी काम कम करता है और अगर बात करे 1000×1000 pixel की तो इसका मतलब दिमाग ज़्यादा गहराई में जा सकता है।

आपका दिमाग भी वैसे ही काम करता है, आपका दिमाग भी photo की clarity की तरह ही काम करता है कि आपका दिमाग जिस भी चीज़ में जितना clear सोच सकता है इसका मतलब उतना ही तेज़ है।

▶ /CoolMitra



100x100 pixels

तो let's suppose एक image है जो अगर 100×100 pixel की है जो किसी का दिमाग है, अब इसको थोड़ा zoom करोगे तो ये image फट जाएगी, उसी तरह कमज़ोर लोगों का दिमाग भी ऐसा ही होता है, वो इतना deep जा ही नहीं पायेगा क्योंकि जैसे ही zoom करेगा तो image फटनी शुरू हो जाएगी, वो नहीं देख पायेगा, उसके सामने confusion create हो जाएगा, उसको तो केवल दूर-दूर से building दिख रही है (according to photo example), साफ कुछ नहीं दिख रहा तो बस उनको उतना ही समझ आएगा कि यार केवल building ही है।



अगर image 500×500 है तो थोड़ा और zoom होगा, तो और clear दिखेगा, उसी तरह दिमाग भी होता है, अब इस बंदे को 100×100 वाले बंदे से ज़्यादा समझ आएगा क्योंकि वो building के अलावा और भी चीज़ें देख सकता है, वो गाड़ियाँ भी देख सकता है वो road भी देख सकता है, इस 500×500 वाले बंदे को ये समझ आता है कि गाड़ियाँ भी होती है लेकिन वो 100×100 वाला बंदा बोलेगा कि ये गाड़ियाँ क्या होती है? Buildings ही तो होती है केवल।

ये example real life में लगाने के लिए, गाड़ियाँ और building यानी वो बातें जो कुछ देख पाते हैं या सोच पाते हैं।



फिर आणा 1000×1000 pixel वाला बाँदा, अब उसे ये image और clear दिखेगी, यानी ये बंदा और deep में जा सकता है, गहराई में और बारीकी में सोच सकता है, मैं बात तो image pixel की कर रहा हूँ पर आपको relate करना है दिमाग से, ये 500×500 वाले से ज़्यादा clear और ज़्यादा चीज़ें और फ़र्क देख सकता है।

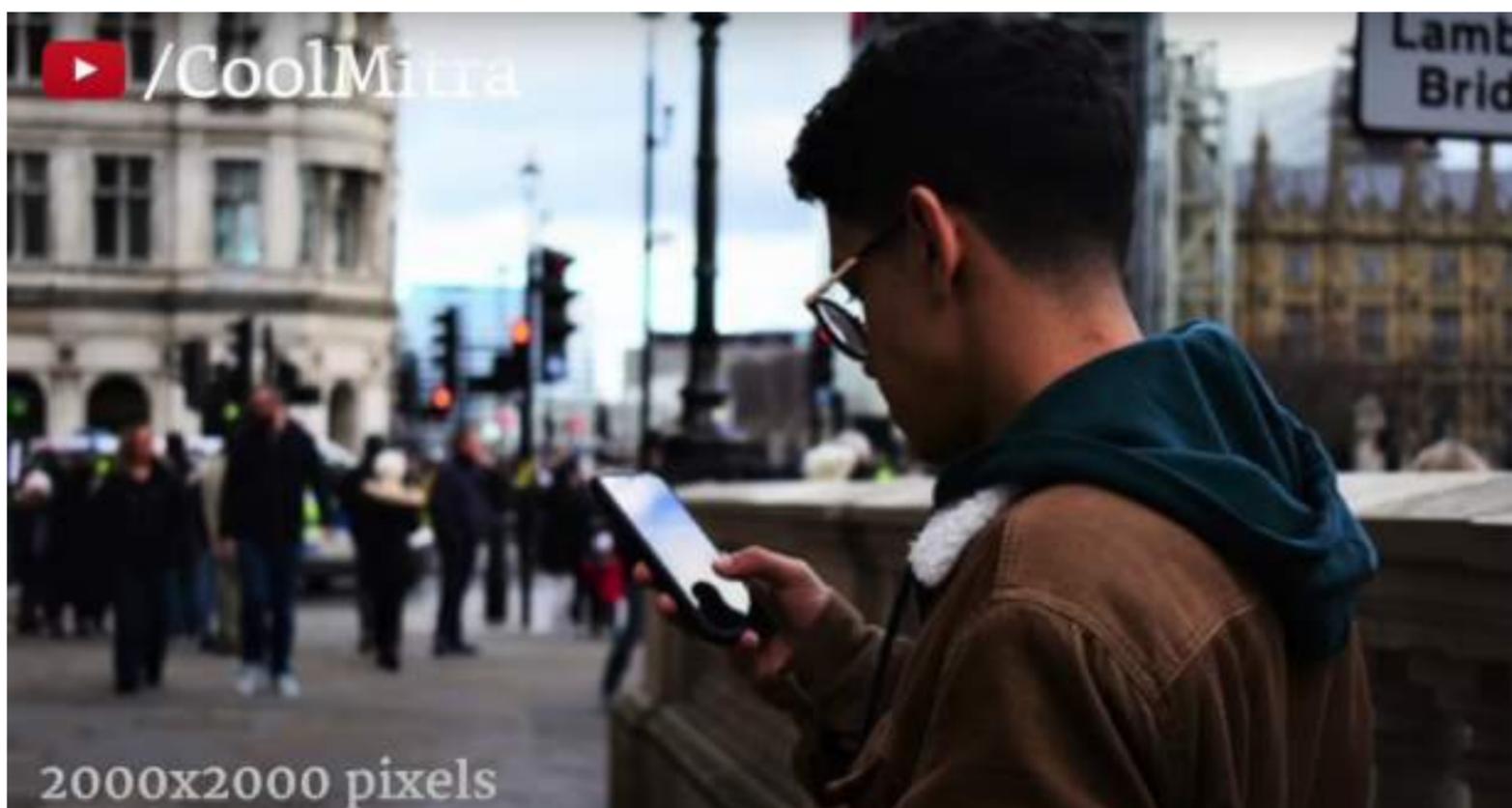
1000×1000 वाला बंदा micro pixel में सोच सकता है, तेज़ दिमाग का मतलब यही होता है, यानी micro

pixel में सोचना। जैसे अभी आप जो पढ़ रहे हो जो मैंने लिखा है इस बात से लेकर मेरी बात तक आपको एक भी चीज़ internet पर नहीं मिलेगी, सब मैं सोचकर लिख रहा हूँ और ये बात अभी जो पढ़ रहे हो सब लिखने में मुझे 5 minutes भी नहीं लगे, एक तो दिमाग़ भरा है बुरी तरह से खयालो से और typing speed भी अपनी 90 plus है।

तो ये 1000×1000 वाला बंदा 500×500 वाले बंदे को बोलेगा कि भाई तुझे पता है इंसान भी है। तू जिसकी बात कर रहा है वहाँ इंसान भी है, केवल गाड़ी और building नहीं है, तो 500×500 वाला बोलेगा नहीं इंसान नहीं है उसमें केवल building और गाड़ी ही है तू कैसी बात कर रहा है ऐसा थोड़ी हो सकता है, अब वहाँ बहस चल रही है उन दोनों के बीच 1000×1000 वाले को क्या पता 500×500 वाले की photo clear नहीं है कि वो तेरे जितना clear नहीं है, उसको इंसान दिख ही नहीं रहे हैं उसको तो केवल road और building ही दिख रही हैं,

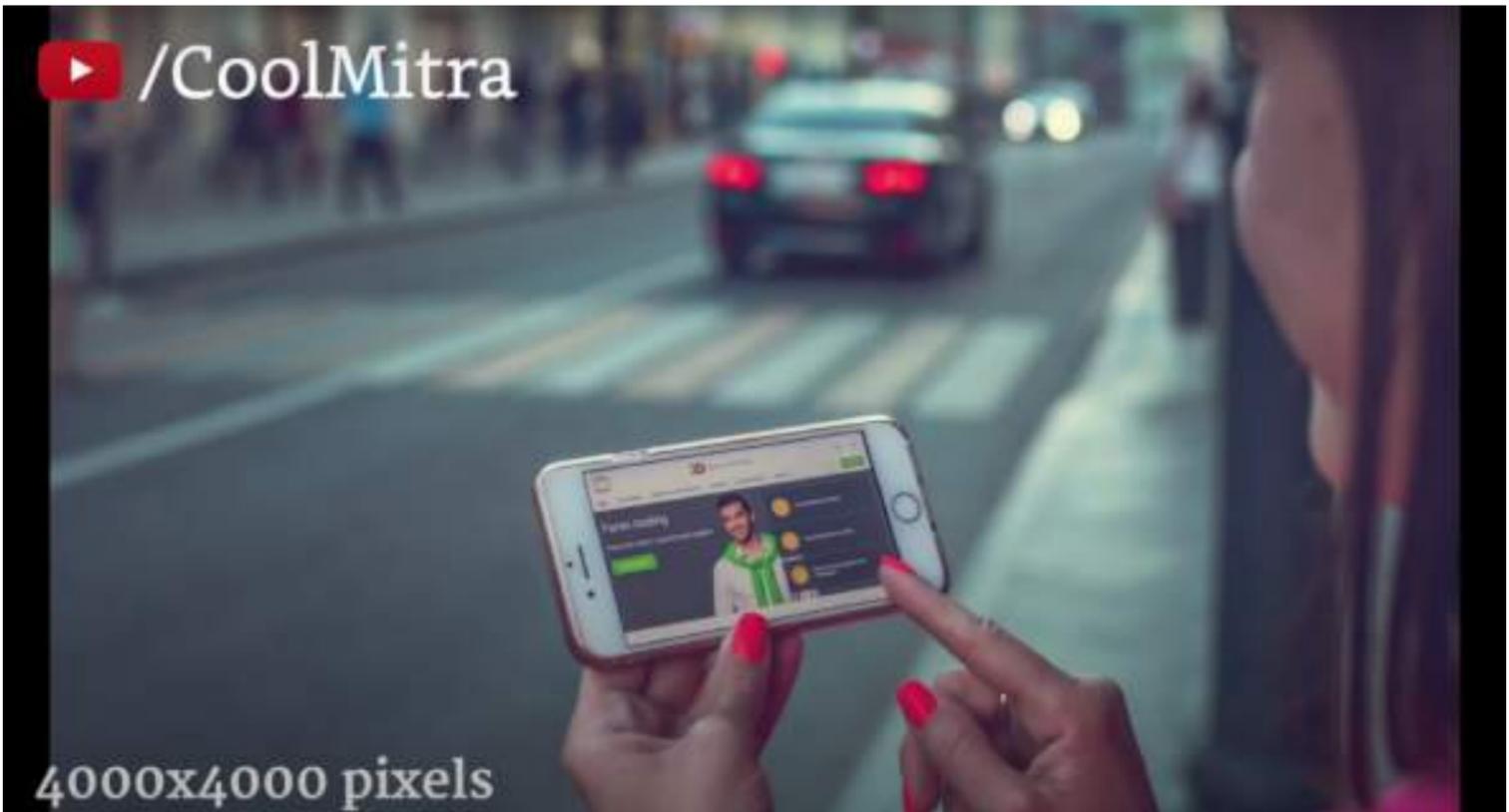
अभी उसके दिमाग का विकास नहीं हुआ, अब यहाँ गलत कोई नहीं है, जिसको जितना दिख रहा है, जो अपने दिमाग की capacity के according जितना सोच सकता है उतना बोल रहा है।

अब जिसका जैसा processor, जैसे जिसके pixel बढ़े हुए, जैसी जिसकी दिमाग के सोचने की sharpness.



फिर आया 2k pixel वाला लौंडा, अरे इसमें तो ये भी है, उसने और कुछ नया बोला, उसने बोला मैंने देखा उसमें इंसान भी है और उसके हाथ में phone भी है, इसने हाथ में phone तक देख लिया, इसने अब और कुछ नया बता दिया, अब यहाँ 1000×1000 pixel वाला बोलेगा कैसी

बात कर रहा है, building, गाड़ी और इंसान ही तो है, ये mobile क्या होता है, इन सबके अलावा तू कौनसी चीज़ बोल रहा है, इसके बारे में तो मुझे पता भी नहीं है।

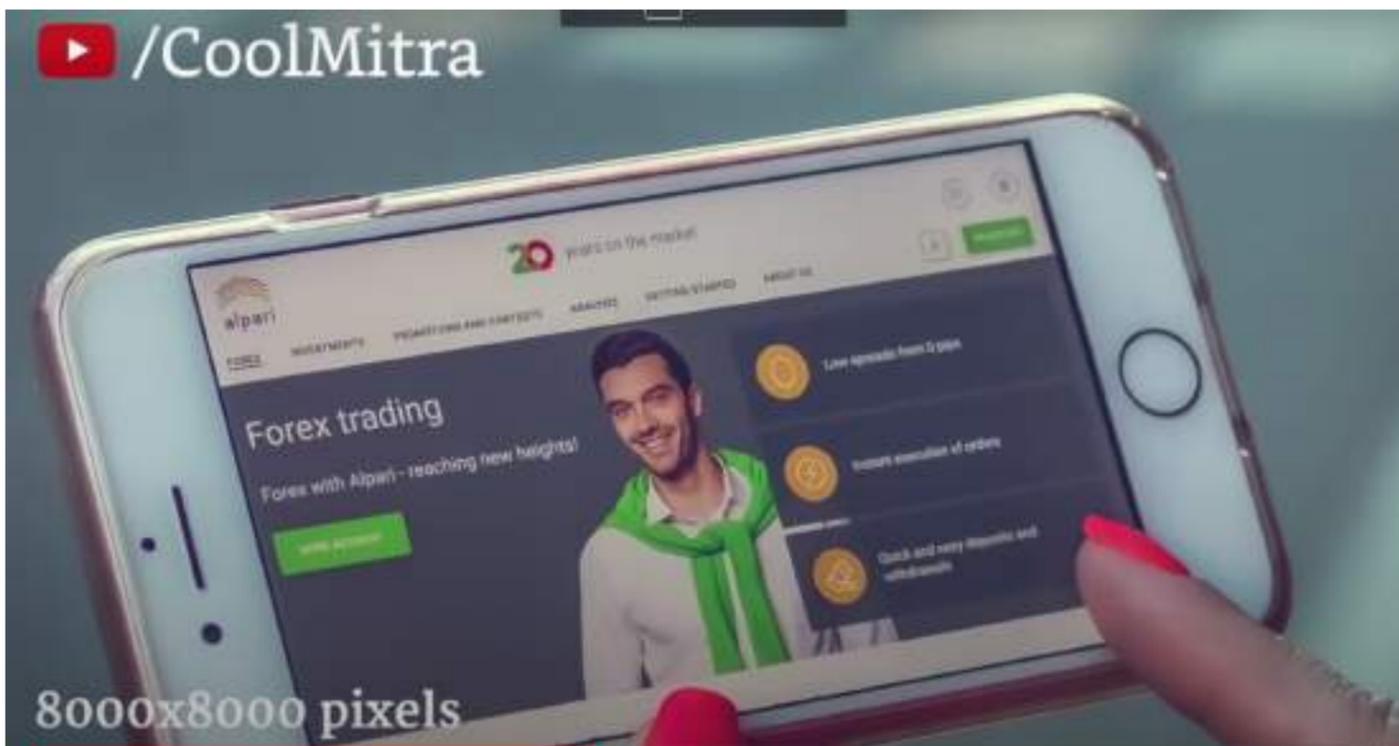


फिर आया 4k वाला बंदा, 4000×4000 pixel वाला बंदा, ये बंदा फिर कुछ नया बोलता है कि मैं जो image देख रहा हूँ, मैं जो बात देख रहा हूँ, मैं जो situation देख रहा हूँ उसमें road भी है, building भी है, गाड़ी भी है, इंसान भी है, उसके हाथ में phone भी है, और उसके phone में क्या display हो रहा है, वो भी मुझे दिख रहा है इतनी दूर से।

क्योंकि 4k है ना, pixel ज़्यादा है, ज़्यादा details देख सकता है, ये और deep में जा सकता है।

इसकी बहस हो गयी 2k वाले बंदे से कि ऐसे कैसे, ये कैसे वगेरह-वगेरह, तूने ये कैसे देख लिया तुझे ये कैसे पता, मैं तो नहीं देख पा रहा।

4k pixel वाले कि बातों को समझने के लिए सामने वाले के भी pixel उतने बढ़े हुए होने चाहिए।



फिर 8k pixel वाला आया, बाप आदमी, 8k pixel thinker, सोच का बादशाह, logical thinker.

ये जो सोच सकता है, ये जो zoom करके देख सकता है, इसको जो नज़र आता है वो किसी कम pixel वाले को

नहीं नज़र आएगा, इस 8k pixel वाले ने road, building, गाड़ियाँ, इंसान देख लिया और इंसान के हाथ में phone में कौनसी app है ये भी देख लिया साथ ही उसको काफ़ी हद तक mobile display के pixel तक दिखने लग गए, 4k वाला कहता है अरे ये display में teen color की light क्या होती है, 8k pixel वाला बंदा कहता है मैं जो display देख रहा हूँ उसमें तीन color है, red, blue एंड green जो कि 4k वाला समझ नहीं पायेगा।

अब ये जो 8k pixel thinker जो है, सबका बाप है, ये जो सोच सकता है, ये जो देख सकता है, उससे अब 100×100 वाला क्या लड़ेगा, बस यही फ़र्क है अमीर और ग़रीब में।

यही फ़र्क है कि कुछ लोग बहुत ग़ज़ब का सोचते हैं, और कुछ लोग हैं जो मूर्ख हैं और बहस करने चले जाते हैं 8k वाले से, भले ही खुद के pixel काम नहीं कर रहे, zoom करने से फट रही है image.

सिर्फ गहराई में जाने का फ़र्क है, कौन कितना देख सकता है, कितनी details देख सकता है बस उसी का फ़र्क है।

ग़रीब जो होता है, दिमाग़ से ग़रीब की बात कर रहा हूँ, इंसान अपनी सोच से ग़रीब होता है, जो ये सोचता है मैं तो बस इतना ही रहने वाला हूँ, जिसका दिमाग़ 100×100 pixel में ही काम करता है, वो ज़्यादा सोच नहीं पाता, वो ज़्यादा दिमाग़ नहीं चला पाता, वो ज़्यादा micro pixel में सोच नहीं पाता, ऐसा नहीं है कि हालात खराब है, मैं ये नहीं कह रहा कि हालात के according pixel काम करते हैं, मैं ये कह रहा हूँ कि अगर मान लो जैसे ये 8k pixel वाला जो बंदा है, इसको पटक दो road पर, इसको फिर से ग़रीबी में डाल दो, इस बंदे का दिमाग़ इतना तेज़ है ना यार, ये बंदा इतने micro pixels में सोच सकता है कि ये फिर से खड़ा हो जाएगा, ये फिर से उस स्थिति में आ जायेगा।

मैं चाहूँगा कि yellow background वाले part को समझ आ जाने के बाद भी 2 से 4 बार पढ़ें to get more

feel, शब्द कम इस्तेमाल करे हैं पर बात ऐसी है कि 100 pages भर दूँ तब भी बात बाकी रहे। So please read with full attention.

तो हर इंसान के पास में क्या asset होती है? वो है सोचने की शक्ति, deep जाने की शक्ति, मज़ा आ रहा है ना मेरी बातों को सुनकर, इसका मतलब है आपको deep जाना पसंद है, और ये deep वाले लोग ग़लत ही खेलते हैं यार, बहुत गंदा मारते हैं, ये लोग बहुत गंदा मारते हैं अपनी परेशानी को क्योंकि इन लोगो की 100×100 वालो की तरह फटती नहीं है, ये उस चीज़ में घुसते जाते हैं कि देखता हूँ कहाँ है इसका solution और निकाल ही लेते हैं। जिसकी सबसे बड़ी वजह होती है curiosity, ये लोग जिज्ञासु होते हैं, आप जिज्ञासु बनकर और दिमाग को बार-बार, जगह-जगह पर खपा कर ही अपने pixels बढ़ा सकते हो, 8k pixel वालो को ठहरना आता है, अब मेरी बातों को समझना कि ठहरने का मतलब क्या होता है, जिसका दिमाग तेज़ होता है वो कैसे ठहरता है, ठहरने का

मतलब क्या है? जैसे आप मेरी बातों पर ठहरे हो, जैसे मैंने ये eBook लिखी तो मैं ठहरा हूँ, इनके दिमाग के अंदर सुकून की अगरबत्ती हो रखी है। ये बेचैनी में फड़फड़ाते नहीं है, इनके अंदर बेचैनी की आग नहीं है, ये conscious observer हैं।

इनको बैठना आता है, इनको सुकून से बिना सोचे भी एक ही चीज़ को देखना आता है, बिना खयालो में भटके एक ही चीज़ को देखना आता है, इनको चुप रहकर भी खुश रहना आता है, इनको घंटो तक एक बात पर टिकना आता है, ये isolation में भी रह सकते हैं, इनको सुबह के उजाले तक भी एक ही चीज़ के ऊपर ठहरना आता है, ये 8k pixel वाले लोगो की ज़िंदगी में ठहराव होता है क्योंकि इनकी deep जाने की limit बहुत ज़्यादा है। एक पूरी रात भी छोटी पड़ जाती है इनके लिए, इनको सुबह कोई उठाने आता है तो वो भी देखता है कि अरे ये तो पहले से ही उठा हुआ है, आज जल्दी उठ गया लेकिन ये पता नहीं कि पूरी रात सोया ही नहीं है।

Photo में जितनी details कम-ज़्यादा होती है, उसी तरह कोई भी स्थिति होती है, वहाँ भी तेज़ दिमाग वाले ज़्यादा details देख पाते हैं। उनका दिमाग केवल एक जगह नहीं हर जगह micro pixel में सोच रहा होता है। इनके jokes भी advance होते हैं, इनका humour भी अच्छा होता है, ये लोग संता/बंता jokes पर नहीं हँसते हैं, इनको हँसना ऐसी जगह पर आ जाता है जहाँ 100×100 pixel वाले सोचते हैं कि इसमें हँसने वाली क्या बात है? वो अलग ही micro pixel में खेल रहे होते हैं।

Micro pixel वाले लोग हर चीज़ में आगे होते हैं।

ये लोग game भी अच्छा खेलते हैं, मज़े भी अच्छे से करते हैं, खुश भी अलग तरह से होते हैं, दुख को भी अच्छे से सहते हैं, वो ज़िन्दगी के हर पल को अलग तरह से जी रहे होते हैं, micro pixel में जी रहे होते हैं, ये लोग micro pixel में feel भी करते हैं, इतना feel करते हैं कि इनको feelings का पूरा अंदाज़ा भी होता है, कि मुझे कब कैसा feel होता है, मैं कब कैसा feel करता हूँ, तो मुझे क्या

करना चाहिए उसके according मुझे कब कैसा feel होगा, उनको हर चीज़ का हिसाब होता है, जैसे लोग पैसो का हिसाब लगाते हैं न वैसे ही ये लोग feelings का भी हिसाब लगा लेते हैं।

ये लोग केवल बातें ही नहीं करते, जब बात हो रही होती है ना किसी से, तब ये केवल बात ही नहीं करते बल्कि ये सामने वाले के दिमाग को भी समझते हैं, वो बात करते-करते आधा दिमाग इसी पर लगाते हैं कि ये कब क्या सोच रहा होगा, ये कब कैसा सोचता है, ये ऐसा क्यों बोल रहा है, इसने अब तक इससे पहले क्या बोला था और आगे क्या बोल सकता है?

इनसे आप झूठ नहीं बोल सकते, क्योंकि ये micro pixel वाले लोग बड़े ही खतरनाक होते हैं, अगर इनको हल्की-सी भी बात अटपटी लगी, एक pixel की भी बात अजीब लगी, एक pixel भी इधर-उधर हुआ तो इनका दिमाग deep जाना शुरू कर देगा कि भाई कहाँ कमी आ रही है, ये pixel कम कहाँ से पड़ रहे हैं, वो तेज़ दिमाग

वाला अपने आप अपने दिमाग में कहानी बनाना start कर देगा कि पहले ऐसा फिर ऐसा, अगर ऐसा कहा तो ऐसा, अगर ऐसा ही करना था तो ये क्यों किया?

और जो 100×100 pixel वाले लोग भी सोच रहे होते हैं अरे यार ये सब तो मेरे साथ भी होता है कि मैं ज़्यादा गहराई में जाता हूँ, यानी मैं भी तेज़ दिमाग वाला हूँ, मैं भी deep में जाता हूँ, मैं भी 8k pixel thinker हूँ, ना जी ना! ऐसा नहीं है।

क्या सोचते-सोचते जाना है वो भी important है, केवल ज़्यादा सोचने से आप 8k pixel के काफ़िले में नहीं आते, जैसे वो कहते हैं ना कि speed के बजाय direction ज़्यादा ज़रूरी है। आप भले ही slow सोचते हो, आप fast नहीं सोच सकते जैसे मैं नहीं सोच सकता fast, मुझे space चाहिए, isolation चाहिए कई बार deep जाने के लिए तो कोई दिक्कत नहीं है।

Fast न सोचो लेकिन ऐसा सोचो कि हल मिले, केवल सोचना ही solution नहीं है, कहाँ सोच रहे हो और क्या सोच रहे हो वो भी important है, हल की तरफ़ सोच जाए, और ये सही direction में सोच उसकी ही जाएगी जिसके pixel बढ़े हुए हो। जो ऐसे dots connect करते हुए जाए कि कोई हल निकले, तो केवल ज़्यादा सोचना important नहीं है, 100×100 वाला भी ज़्यादा सोच सकता है, लेकिन 8k pixel वाला क्या करेगा? वो ज़्यादा सोचने के साथ direction भी सही से बनाएगा कि actual में जाना कहाँ हैं? क्योंकि इसको details देखनी आती है केवल सोच की दुनिया में गोल-गोल घूमने का ये मतलब नहीं है कि आप genius हो।

अब 100×100 वाला 8k pixel तक कब पहुँचेगा?

उसका दिमाग़ तेज़ कब होगा? दिमाग़ तेज़ कैसे करे?

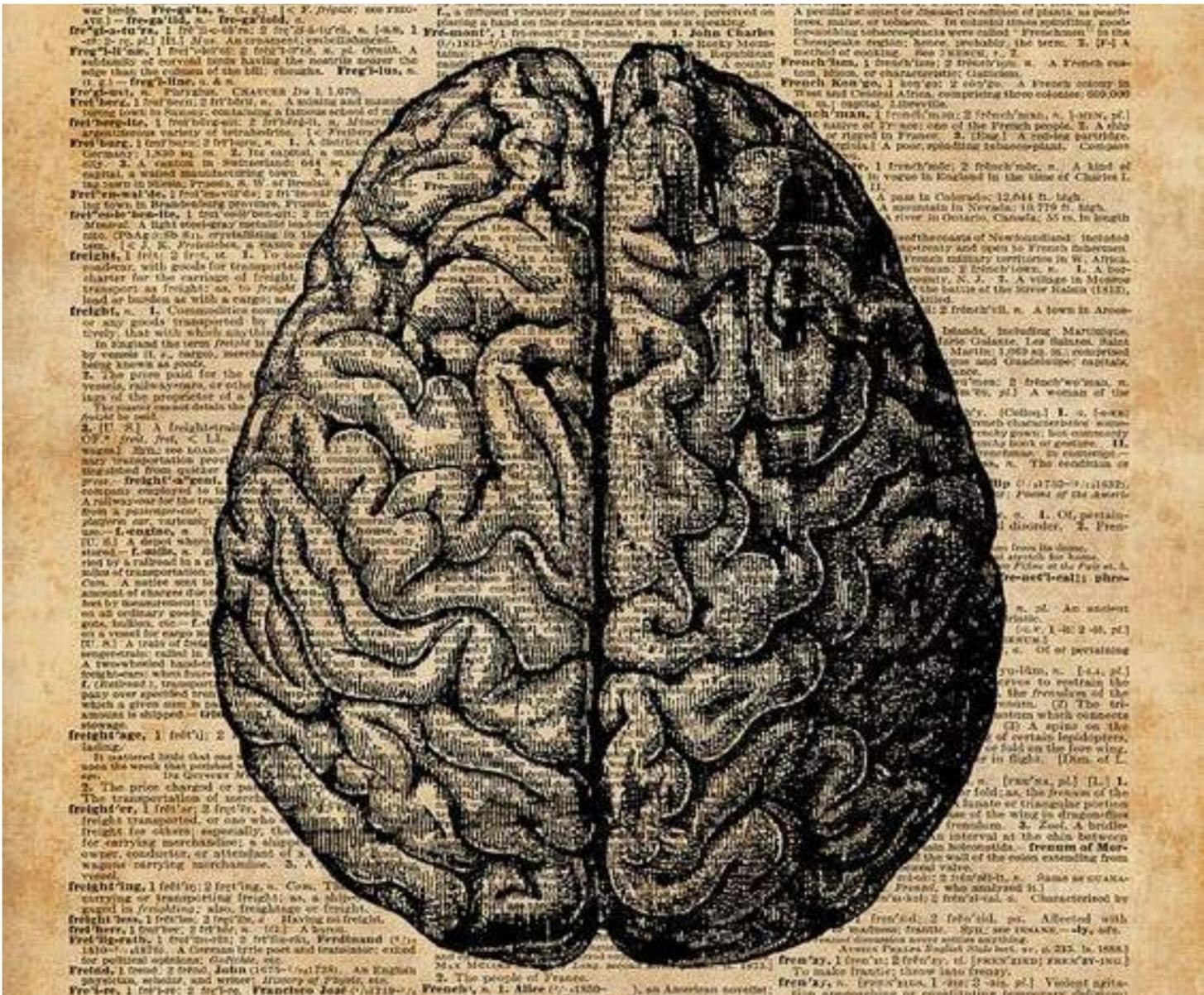
एक minute, दिमाग़ तेज़ कैसे करे ये आपको जानना है

तो कहीं ऐसा तो नहीं कि आपका दिमाग़ 100×100 में

आता है? Haha! Sorry just kidding with my readers!

वैसे अगर आप ये eBook बहुत! ज़्यादा ध्यान से पढ़ रहे हो न तो यानी पता चल गया कि already आपका दिमाग गहराई में सोचता है, you are already in the house of 8K pixel thinkers.

दिमाग तेज़ कैसे करे?



कोई भी इंसान details कब जान सकता है? जैसे मैं बात कर रहा हूँ कि 8k pixel वाला कोई कैसे बन सकता है? कोई भी इंसान गहराई में कब जा पाता है? किसी भी बात को गहराई में कब पता लगा पाता है? जब उसका details में देखना आदत बन जाती है, जब micro pixel में सोचना उसके लिए आसान बन जाता है, उसका दिमाग उस चीज़ के लिए ready हो जाता है, और ये सब कुछ आता है

practice करने से कि आप कितना ज़्यादा वर्तमान में रह सकते हो।

वर्तमान में रहना!

कितना ज़्यादा aware रह सकते हो, awareness ही solution है हर चीज़ का solution निकालने का, read it again, awareness ही solution है हर चीज़ का solution निकालने का।

100x100 और 8000x8000 pixel वालो के दिमाग को अगर ढंग से देखा जाए तो दोनों में actual में क्या फ़र्क है? कम दिमाग और तेज़ दिमाग में फ़र्क क्या है? यानी कि 100x100 वाले गहराई में क्यों नहीं जा पा रहा है? क्योंकि वो aware नहीं है, उसके sense इतनी ज़्यादा ताक़त लगाकर बात को समझ नहीं पाते हैं, इसको focus बोल सकते हो, aware होना बोल सकते हो, present moment में रहना बोल सकते हो।

मैं वर्तमान में रहने का बोल रहा हूँ तो मतलब कुछ और मत समझ लेना कि मैं बात कर रहा हूँ future और past में मत जियो, या मैं ये advice नहीं दे रहा कि बीते हुए कल को भूल जाओ और आने वाले कल की चिंता छोड़ दो और आज में जियो, ये सब मैं नहीं बोल रहा, ये सब school में already बहुत सुन लिया अब नया सुनते हैं, वर्तमान से मेरा मतलब है, आप तब गहराई में जा सकते हो, जब आप ठहर सकते हो, आपका दिमाग आपको हल निकालकर तब देगा जब आप ठहर सकते हो, और ठहर वही सकता है जो focused रहता है, जो aware होता है, जिसके लिए meditation कोई करने की चीज़ नहीं, जिसके लिए एक जगह बैठकर meditation को करने का ढांग नहीं करना पड़े, जिसके लिए हर काम meditation बन जाता है, सोचना, खाना-पीना, चलना, बोलना सब कुछ awareness के साथ हो जाता है।

YouTube पर किसी भी बात को अच्छे से explain करने से मुझे बहुत डर लगता है क्योंकि एक YouTube

creator का सबसे बड़ा डर होता है कि कोई उसकी video पूरी देखेगा या नहीं, क्योंकि जब video boring बन जाती है तो channel खत्म होना शुरू हो जाता है, और इसी वजह से कई बार बात को आसान करना होता है, और तब भी एक डर रहता है कि यार ये बात वाकई easily convey हो रही है या नहीं?

मुझे हर वक़्त, हर बात explain करने के बाद ये लगता है कि मैंने 10% भी नहीं बताया, यही problem है जब मैं ज्यादा deep में जाता हूँ तो लोग मेरी video बीच में ही छोड़ देते हैं जिसकी वजह से YouTube मेरी video आगे suggest नहीं करता, लोगों के homepage पर ज्यादातर जोशीली और बेमतलब की positive बातों वाली video मिलती है, इस दुनिया में किसी को मुद्दे की बात नहीं पसंद, अगर मैं अनमोल वचन बोल रहा होता न, जो मैं 6th class में प्राथना के वक़्त अखबार से notebook में लिखकर जाता था और फिर सुनाता आज के अनमोल वचन... तो वो मैं 6th में करता था, वो अगर

मैं अभी करता तो 100×100 pixel वालो को मज़ा आ जाता।

अफ़सोस, 8k वाली audience बहुत कम है, पर जितने है वो मेरे लिए वाक़ई में बहुत है, अगर कोई एक इंसान भी इस eBook को पढ़ रहा है तो वो मेरे लिए बहुत बड़ी बात है।

ओये 8k वाले, आज्ञा यार और इस eBook को उसको भी पढ़ा जिसका दिमाग़ 8k pixel में सोचता है, अबे सुन, 100×100 वाले को मत बताना, वो बोलेगा अरे यार इसमें तो केवल building है। शकील बात कर रहा है car की, building की, इंसानों की वो तो इसमें है ही नहीं, मुझे तो केवल building दिख रही है, दिखेगी कैसे? low quality image है अभी।

धुँधला-धुँधला दिख रहा है कुछ समझ नहीं आ रहा क्या है? छोड़ देगा वो मेरी ये eBook.

समुद्र की सतह

यहाँ आपकी 100% attention की ज़रूरत है।



अब आपको वो energy मिलेगी, logical बातों की पन्नी से cover लगा कर अभी जो मैं आपको बताने वाला हूँ वो जानकर आपको जिस trigger की ज़रूरत है वो पूरी हो जाएगी, 8k pixel thinker बनने के बाद अब आपको लेकर चलता हूँ समुद्र की सतह पर।

समुद्र की सतह तक लेकर जाकर मैं आपको trigger करने वाला हूँ किसी एक thought को लेकर, don't worry hypnotize नहीं करने वाला, बस मैं गहरे समुद्र में जा ही रहा था तो सोचा आपको भी साथ ले चलूँ।

Get, set, ready, Jump!

हम हर वक़्त, जो भी बोल रहे होते हैं, जो भी कर रहे होते हैं, देखना, सुनना, बोलना, feel करना, रोना, ये सब एक ही चीज़ के through हो पाता है और वो है thought.

विचार, अगर आप सीधे रुके हुए खड़े हो, आपको चलना start करना है, तो पहले कदम से पहले micro second में आपके दिमाग़ में thought आया था, अगर आपने अभी मेरे मुँह से elephant सुना है तो आप already microsecond में elephant के बारे में सोच चुके हो, उसकी size, उसका shape, ये क्या है, क्यों है? सब कुछ।

इन सब बातों का क्या sense है? बस मेरे साथ और गहराई में चलो समुद्र की सतह अभी आनी है।

तो अगर आपको language आती नहीं, तो elephant से जुड़ी कोई picture या feel आपको नहीं होगा।

समझने के लिए, आसान करने के लिए आप समझो कि

आपके दिमाग में जितनी भी memories है, languages, names, information, logical बातें, experiments सब कुछ, वो सब thoughts है। सब कुछ thoughts है, सब कुछ विचार है, जिसे हम सोचते हैं। जिस तरह एक memory card में कोई भी photo, कोई भी video, कोई भी file zero और one digit में होती है, यानी कोई भी data का 0-1 में ही collect होता है, उसी तरह आपके दिमाग में सब-कुछ as a thought इकट्ठा हो गया।

अभी आपको जिर से दौड़ कर आगे की तरफ बढ़ना है क्योंकि आपके पीछे कुत्ता पड़ा है, आपको डर लगा क्योंकि आपको thought आया जो आपकी memory में पड़ा था, आपको shortcut लेना है ये आपको microsecond में, इतनी speed से ये हो रहा होता है कि आप process count नहीं कर सकते, तो आपको shortcut लेना है, इसका thought आया जो आपकी memory में पड़ा है।

अगर आपके दिमाग से एक-एक data remove कर दें, जिस तरह से एक memory card को format किया जाता है, एक भी KB की file नहीं रहती, तो बस आप सिर्फ उस बच्चे की तरह दुनिया को देख रहे होंगे जैसे पैदा होते ही एक बच्चा देखता है।

बस थोड़ा और गहराई में चलो मेरे साथ समुद्र की सतह आने वाली है।

कोई भी चीज़ यानी गाड़ी, घर, पेन सुई कुछ भी। कोई भी वक्त अच्छा, बुरा, शांत, शोर कुछ भी, ये सब कुछ होता है thoughts की वजह से।

आपने मेहनत की, महीने के end में जो आपको earning मिलती है वो आपके thoughts की वजह से ही मिलती है, क्योंकि थोड़ी ही देर पहले हमने समझा था कि आप thoughts के बिना तो एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा सकते। यानी जो भी मिलता है, जो भी होता है वो thoughts की वजह से होता है।

आपके दिमाग में thought आया पानी को बर्फ बनाने का, आपने उसे बना दिया।

Number one: बर्फ, पानी, ठंडा, fridge, चल कर जाना, बिजली, ग्लास, ये सब memory में हैं। आपने बस बहुत तेज़ी से ये सब सोच लिया, यानी आपको thoughts आये।

आपने हाथों से action लिया और वो बर्फ बन गया।

तो सब कुछ आपके ही thoughts से होता है तब आपकी life में वो क्यों होता है जो आपके thoughts नहीं थे?

Right?

क्या मुझे काफी गहराई में जाना चाहिए?

Disclaimer: अगर आगे और गहराई में चलना है तब आपको इसे और ज़्यादा ताक़त से और ध्यान से पढ़ना होगा, वरना आप मेरे काँच के बने box से बाहर निकल

कर फिर से समुद्र की ऊपरी सतह पर चले जाओगे, मैं आपको समुद्र की एकदम नीचे वाली सतह touch करवाना चाहता हूँ।

तो?

सवाल अगर सब-कुछ, यानी आप जा रहे थे और आपको किसी ने टक्कर मार दी, वहाँ आपका क्या thought था, ये टक्कर लगना तो आपने नहीं सोचा था।

Law of Karma समझाता हूँ, लेकिन Law of Karma के बारे में already जो भी जानते हो वो कुछ वक़्त के लिए भूल जाओ और मेरे साथ गहराई में चलते जाओ।

Law of Karma सीधा-सीधा यही है, एक इंसान कुछ भी करता है उसका result पूरी दुनिया देखती है, उसकी वजह से पूरी दुनिया के हर इंसान की life में और nature में बदलाव आता है, और ये पूरी दुनिया जो कर रही है उसका बदलाव एक इंसान पर आता है।

एक इंसान के दिमाग में thought आया, action लिए और हवाई जहाज बना दिया, एक इंसान के कर्मा से पूरी दुनिया में बदलाव आ गया।

पूरी दुनिया इस पृथ्वी को प्रदूषित कर रही है, मिलावट कर रही है, उसका फ़र्क आपकी health पर पड़ रहा है, यानी कि पूरी दुनिया के कर्मों का result आपको मिल रहा है।

आपको गाड़ी से टक्कर लग गयी, हो सकता है उसको गाड़ी सही से चलानी नहीं आती, उसका ध्यान वहाँ था कि उसकी बीवी कल किस से बात कर रही थी? तब उसकी वजह से आपको result मिल गया। यानी उसकी बीवी से जो बात कर रहा था वो, उसकी बीवी और उसकी गाड़ी का सही से न चलाना ये सब दुनिया कर रही है लेकिन result आपको मिला।

एक इंसान का जब जन्म होता है, पूरी दुनिया उसे सिखाती है, वो दुनिया को ही देखकर बनता है जो उसे बनना है, अब उसे जो करना है, वो दुनिया में बदलाव आएगा।

बस अब समुद्र की सतह आ ही गयी।

मैंने दो बातें साबित कर दी, जिस पर सवाल नहीं कर सकते, क्योंकि मैंने बातें नहीं मैंने तो सच बताया है, 2 और 2 चार तो होते ही है, इसमें मैंने कोई तीर नहीं मारा, मैंने तो बताया 2 और 2 चार कैसे होते हैं।

मैंने 2 बातें जो होती ही होती है उसे समझाया।

पहली ये कि आप बिना thought के हाथ की एक अँगुली भी नहीं हिला सकते, दिल धड़कना, साँस लेना, kidney से पानी का urine बनना ये सब कौन कर रहा है फिर? ये सब आपका subconscious mind कर है है, उसे side में रखो कुछ वक़्त के लिए वरना इस काँच के box से बाहर चले जाओगे।

तो, एक ये कि आप बिना thought के हाथ की एक अँगुली भी नहीं हिला सकते, दूसरा ये कि जो आप नहीं कर रहे उसके पीछे Law Of Karma काम करता है।

लेकिन आपको इन सब बातों का फ़ायदा क्या है, Right?

मज़ा, इतना मज़ा कि आप पागल हो जाओगे, आप अपने हाथों से वो painting बनाओगे जिसे लोग देखेंगे नहीं बल्कि चाटने लग जाएंगे। मज़ाक कर रहा हूँ, इधर आओ वहाँ नहीं जाना है, समुद्र की सतह यहाँ से आएगी।

हाँ तो आपका इससे क्या फ़ायदा है?

जब इंसान के दिमाग़, यानी इस दुनिया की, इस भ्रह्माण्ड की सबसे ताक़तवर मशीन के कुछ principles समझ लेते हो, आपको basic समझ आ जाते, आपको fundamental समझ आ जाता है तब आप इसे अच्छे से चला सकते हो, YESS exactly सही समझ रहे हो, अभी आप जो सोच रहे हो वही समझाना चाहता हूँ, कुछ लोग समझ गए होंगे कि समुद्र की सतह में 8k pixel brain की चाबी पड़ी है।

मैंने 8k pixel brain करने का तरीका बताया था consciousness, वर्तमान में रहना या aware रहना,

आपके एक-एक action, विचार, हलचल से aware रहना और FOCUSED रहना, exactly वही चीज़ हम समुद्र की सतह में लेने जा रहे हैं।

नहीं समझ आया, मुझे भी नहीं आया था, पर ये सुनने के बाद समझ आ गया था जो मैं अब बताने वाला हूँ।

जो भी होता है, जो भी मिलता है thoughts से मिलता है, hence proved, you become what you think about, दुनिया की कोई भी ताक़त इस power को challenge नहीं कर सकती है, आप सवाल नहीं कर सकते और अगर सवाल आ भी रहा है तो उसे छोड़ दो ये फ़ालतू का कीड़ा है।

सारा खेल thoughts का हो गया?

Thoughts better कर लिया तो life better है ना?

(Meanwhile Law of Karma भी work करता है)

बताओ कोई शक है?

तो thoughts better यानी life better.

Thoughts better कैसे होंगे?

अरे शुरुआत में ही तो बताया था आपके दिमाग में पड़ी information से।

आप जो भी सोचते हो memory के base पर सोचते हो, अगर memory format कर दें तो आप एक दिन के बच्चे के बराबर हो जाओगे।

वो देखो सतह आ गयी बस 100 meter गहरा और जाना है।

तो सुनो!

Law of Karma को छोड़ो, दुनिया क्या कर रही है जिसकी वजह से आपकी life में फ़र्क आ रहा है उसको मारो गोली, मेरी favourite gun AWM से 8x लगा कर, क्योंकि आप तो 8k pixel thinker हो तो 8x तो होगा ही आपके पास, just kidding.

लेकिन ये जो आपकी वजह से बदलाव आएगा न वो आएगा आपके इस छोटे से चर्बी के बने दिमाग के अंदर पड़ी information की वजह से।

ज्ञान लो, books पढ़ो, CoolMitra की एक भी video मत छोड़ो, Instagram, YouTube जैसे सभी platform पर काम के pages follow करो, हर महीने 2 से 3 किताबें पढ़ो, दोस्त बदल लो, जगह बदल लो, कुछ भी कर दो इस इस दिमाग की memory को काम की बनाओ।

क्योंकि ये सब thoughts memory के according आएंगे, thoughts के according आपके actions होंगे, actions के according result मिलेंगे, आपकी

दुनिया में आपकी वजह से फ़र्क आएगा, Law Of Karma rule भी खुश हो जाएगा।

BUT BUT BUT BUT BUT BUT....

BUT,

BUT,

लेकिन!

केवल आपके दिमाग में पड़ी information enough नहीं है इसी वजह से मैंने 8k pixel thinking को सबसे पहले ही introduce किया, यानी केवल ज्ञान का होना सब-कुछ नहीं होगा, केवल mobile के storage का होना सब-कुछ नहीं होता, उसका processor और software भी fast और अच्छा होना चाहिए।

KEY: Information से thoughts बनते हैं, और action क्या लेना है उसके लिए mind sharp होना ज़रूरी है यानी 8k pixel thinking mind, और वो तब होगा जब आप बहुत ही ज़्यादा focused और aware होकर information को action में बदल-बदल कर बार-बार practice करोगे।

Thoughts की power का एक example देता हूँ फिर eBook end है।

आप सोच रहे हो मैं ये सब कैसे सोच लेता हूँ, ये बस thoughts की वजह से, memories में यही पड़ा है, 8 साल का था तब पापा से कहता था पापा ये Joel Osteen बोलता है ऐसा मुझे भी बोलना है, जिसे लाखों लोग सुने, तो हुआ ये कि इतने पहले ही thoughts यानी विचार ऐसे बनने लगे तो actions भी वैसे ही धीरे-धीरे होते गए, फिर information भी वहीं भरता गया और वो भी पूरे ध्यान से, focused होकर आज मैं information को अच्छे से process करके लिख लेता हूँ, यानी कि समुद्र की सतह

जाने से काफी पहले मैंने 8k pixel thinking की तैयारी कर ली थी।

जाओ ज़िन्दगी बदल लो अब, समुद्री सतह आ गयी,
Congratulations.

Thanks मेरे साथ चलने के लिए, सफ़र में मज़ा आया?

ये तो एक ही समुद्र है मैं ऐसे कई समुद्र की सतह को छू कर आया हुआ हूँ, मेरे बाकी Ebooks या Courses में मिलते हैं, अगर आपको लगता है मैंने किसी भी तरह से आपकी सोच में 1% भी फर्क लाया है तो आप निचे review लिंक पर जाकर मुझे बता सकता जो आपको ये Ebook कैसी लग, इसके लिए आपको एक मिनट भी नहीं लगेगा।

[Send Review \(सिर्फ 1 मिनट लगेगा\)](#)

Bye!! मैं शकील CoolMitra से आपके सपनों को support करता हूँ।

About Author



मोहम्मद शकील एक राइटर, स्पीकर, डिजिटल मार्केटर, ऑनलाइन ट्रेनर, एक महान विचारक और विज्ञनरी इंसान हैं। शकील सिर्फ 22 साल के है और उन्हें भारत के सबसे कम उम्र के मोटिवेशनल स्पीकर होने के लिए यूनाइटेड नेशंस द्वारा सम्मानित किया गया था।

YouTube पर उनके 20 लाख से ज्यादा सब्सक्राइबर्स हैं जहां शकील लॉजिकल-मोटिवेशन, पैसे कमाने के तरीके, जिन्दगी बदल देने वाले फॉर्मूले, इंटेलेक्चुअल टॉपिक्स और हद पार मेहनत करने के ऊपर बात करते हैं। CoolMitra चैनल 4 साल पहले शुरू हुआ था और अब तक 120 मिलियन से ज्यादा व्यूज़ का सफ़र पूरा कर चुके है। इसी

कैटेगॉरी में ये शॉर्ट-फ़िल्म का चैनल शुरू कर रहे जो पूरे देश में कोई नहीं कर रहा।

इनके वीडियो कोर्सेज़ और ई-बुक्स भी उपलब्ध हैं। उन्होंने सिर्फ 4 महीने में 100,000 से अधिक ई-बुक्स बेची है, इन्होंने 2018 में अपना एक वीडियो कोर्स तब काफी स्टूडेंट्स को ज्यादा प्राइस पर बेचा था जब पूरे भारत में बहुत कम लोग बेच रहे थे।